ख्रीस्तीय एवं जैन धर्मानुयायी साथ मिलकर परिवारों में अहिंसा को प्रोत्साहित करें

महावीर जन्मकल्याणक दिवस सन्देश

2017

वाटिकन सिटी

प्रिय जैन मित्रो,

09 अप्रैल को मनाई जानेवाली तीर्थंकर वर्धमान् महावीर की 2615 वीं जयंती के उपलक्ष्य में अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी परमधर्मपीठीय परिषद आपके प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता है। हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि यह उत्सव आपके हृदयों, परिवारों एवं समुदायों में सुख और शांति लाए।

अपने कई एवं विभिन्न रूपों के साथ, हिंसा, विश्व के अधिकांश भागों में एक महान् चिंता का कारण बनी हुई है। अस्तु, इस सुअवसर पर हम आपके साथ इस चिन्तन को साझा करना चाहते हैं कि किस प्रकार हम दोनों, ईसाई और जैन, समाज में शांति बनाए रखने के लिए परिवारों में अहिंसा को बढ़ावा दे सकते हैं।

हिंसा के कारण उतने ही जटिल और विविधतापूर्ण हैं जितनी इसकी अभिव्यक्तियाँ। प्रायः हिंसा अस्वास्थ्यकर परवरिश और ख़तरनाक शिक्षा का परिणाम होती है। आज, समाज में बढ़ती हिंसा के सन्दर्भ में, यह आवश्यक है कि परिवार सभ्यता की प्रभावशाली पाठशालाएँ बनें और अहिंसा के मूल्य को पोषित करने का हर सम्भव प्रयास करें।

अहिंसा व्यक्ति के जीवन में इस सुनहरे नियम का ठोस विनियोग है: 'दूसरों के लिए वैसा ही किया करें जैसा कि आप अपने लिए दूसरों से चाहते हैं'। यह इस बात की मांग करता है कि हम अन्य, जिसमें 'भिन्न अन्य' भी शामिल है, का सम्मान तथा उसके साथ व्यवहार ऐसे व्यक्ति के रूप में करें जो अन्तरनिष्ठ मानव प्रतिष्ठा एवं अविच्छेद्य अधिकारों से सम्पन्न है। इसलिए, अन्यों को किसी भी प्रकार की हानि से बचाना, हमारी जीवन-यापन शैली एवं मनुष्यों के रूप में जीने का यथोचित परिणाम है।

दुर्भाग्यवश, अधिकांशतः, भय, अज्ञानता, अविश्वास या अतिश्रेष्ठता की भावना के कारण, कुछ लोगों द्वारा, सामान्य तौर पर, 'अन्य' को और, विशेष रूप से, 'भिन्न अन्य' को स्वीकार करने से इनकार ने, व्यापक असहिष्णुता और हिंसा का माहौल उत्पन्न कर दिया है। "अधिक प्यार एवं अधिक भलाई से" इसे पराभूत किया जा सकता है (सन्त पापा बेनेडिक्ट 16 वें, देवदूत प्रार्थना, 18 फरवरी, 2008)।

इस 'अधिक' के लिए हमें, निश्चित्त रूप से, दैविक अनुग्रह की आवश्यकता है, साथ ही, प्रेम एवं भलाई को परिपोषित करने के लिये उपयुक्त जगह की भी आवश्यकता है। परिवार वह प्रमुख स्थल है जहाँ शांति और अहिंसा की संस्कृति स्वस्थ एवं ठोस रूप से पनप सकती है। यहीं बच्चे, सन्त पापा फ्राँसिस के अनुसार, माता-पिता एवं बुज़ुर्गों का उदाहरण पाकर, "सम्वाद करना एवं एक दूसरे का ख़्याल रखना तथा मनमुटाव और यहाँ तक कि संघर्षों का निवारण भी बलप्रयोग द्वारा नहीं अपितु सम्वाद, सम्मान, अन्य की भलाई के प्रति उत्कंठा, दया और क्षमा द्वारा करना सीखते हैं" (दे. विश्व धर्माध्यक्षीय सभा के उपरान्त प्रकाशित प्रेरितिक उदबोधन, आमोरिस लेतित्सिया, 2016, अंक 90-130). अहिंसा के योद्धाओं द्वारा ही, समाज में अहिंसा को वास्तविक जीवन यापन का तरीका बनाने में, परिवार योगदान कर सकते हैं।

हमारे दोनों धर्म प्रेम और अहिंसा के जीवन को श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। प्रभु येसु ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि वे अपने शत्रुओं से भी प्यार करें (दे. लूक.6:27) तथा अपने जीवन के उत्कृष्ट उदाहरण से उन्हें भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, हम ख्रीस्तीयों के लिये, "अहिंसा केवल कोई रणनीतिक व्यवहार नहीं है अपितु, यह व्यक्ति की जीवन-यापन शैली है जो प्रेम एवं सत्य पर आधारित है" (दे. सन्त पापा बेनेडिक्ट 16 वें, देवदूत प्रार्थना 18 फरवरी, 2008)। आप जैन धर्मियों के लिये 'अहिंसा' धर्म का अवलम्ब, आश्रय है – 'अहिंसा परमो धर्मः' (अहिंसा सर्वोच्च गुण या धर्म है)।

अपनी धार्मिक आस्थाओं में मूलबद्ध विश्वासियों के सदृश तथा साझा मूल्यों वाले व्यक्तियों समान हम, अन्य धर्मावलम्बियों एवं शुभचिन्तकों के साथ मिलकर, मानव परिवार के प्रति सह-उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित होकर, अपने सामान्य घर एवं उसके समस्त निवासियों का ख़्याल रखनेवाली मानवता के निमार्ण हेतु परिवारों को अहिंसा की नर्सरियाँ बनाने के लिये, व्यक्तिगत एवं सामुदायिक रूप से, वह सब करें जो कर सकते हैं।

आप सबको महावीर जन्म कल्याणक सुखद पर्व की हार्दिक मंगलकामनाएं!

Jean-Louis Card. Tauran

कार्डिनल जाँ-लूई तौराँ
अध्यक्ष

+ Miguel Ayuso Guixot

धर्माध्यक्ष मिगेल आन्गेल अयुसो गिक्सो, एमसीसीजे
सचिव

PONTIFICAL COUNCIL FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.pcinterreligious.org/